PHOTO STORY

HINDI

MAY.2026-DIGITAL ISSUE LUCKNOW

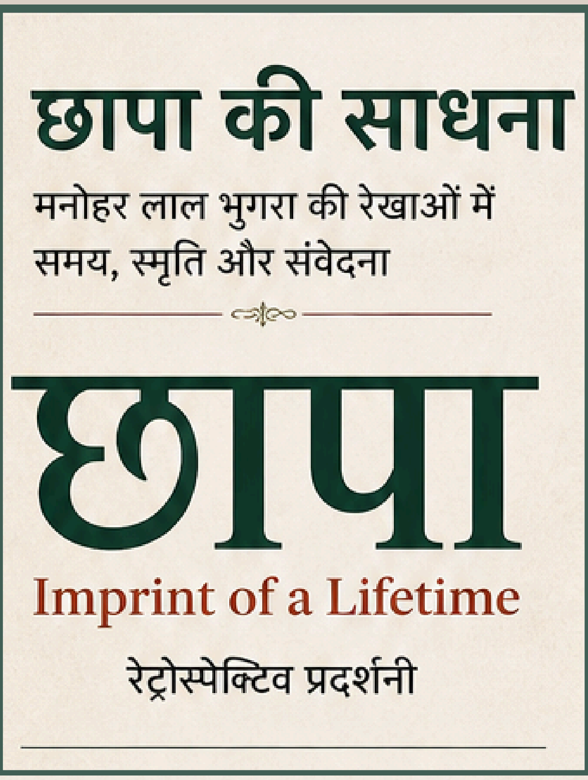

कलाकार
मनोहर लाल भुगरा

क्यूरेटर
वंदना सहगल

विशेष अतिथि
प्रो. जय कृष्ण अग्रवाल

मनोहर लाल भुगरा की ‘छापा’ प्रदर्शनी: रेखाओं में समय, स्मृति और संवेदना की अनूठी यात्रा

लेखक – भूपेंद्र कुमार अस्थाना

लखनऊ, 6 मई 2026। वरिष्ठ छापाकार मनोहर लाल भुगरा की रेट्रोस्पेक्टिव प्रदर्शनी “छापा – IMPRINT OF A LIFETIME” का शुभारंभ 6 मई से लखनऊ स्थित कोकोरो आर्ट गैलरी में हो रहा है। इस प्रदर्शनी का संयोजन वंदना सहगल द्वारा किया गया है, जिन्होंने छापाकला के उस संवेदनात्मक भूगोल को उभारने का प्रयास किया है, जहाँ तकनीक, स्मृति और जीवन-दृष्टि एक साथ आकार ग्रहण करते हैं। समकालीन भारतीय कला परिदृश्य में छापाकला (प्रिंटमेकिंग) आज एक सशक्त और विचारोत्तेजक माध्यम के रूप में अपनी निरंतर उपस्थिति दर्ज करा रही है, और यह प्रदर्शनी उसी दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रस्तुति है।

प्रदर्शनी में लिथोग्राफी, एचिंग, लिनोकट, वुडकट और ड्राइपॉइंट जैसी विविध तकनीकों में निर्मित लगभग 51 कृतियाँ प्रदर्शित हैं। ये कृतियाँ कलाकार की दशकों लंबी सृजन-यात्रा का समग्र रूप प्रस्तुत करती हैं, जिसमें उनकी कलात्मक साधना, तकनीकी दक्षता और वैचारिक परिपक्वता का अद्वितीय संगम दिखाई देता है। साथ ही, ये कृतियाँ समय, स्मृति और समाज के साथ उनके गहरे संवाद को भी उजागर करती हैं।भारतीय समकालीन कला में छापाकला को विशिष्ट पहचान दिलाने वाले कलाकारों में मनोहर लाल भुगरा का नाम अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। उनकी कृतियाँ सूक्ष्म संरचना, अनुशासित रेखांकन और गहन भावात्मकता के लिए जानी जाती हैं। उनके प्रिंट्स में पारंपरिक तकनीकों और समकालीन संवेदनाओं का संतुलन दर्शकों को

शेष भाग पृष्ठ -2 पर

एक गहरा दृश्य-अनुभव प्रदान करता है—जहाँ हर छवि एक अनुभव बन जाती है। लखनऊ की सांस्कृतिक विरासत और लखनऊ कला एवं शिल्प महाविद्यालय की शैक्षिक परंपरा ने उनके व्यक्तित्व और कला को विशेष रूप से आकार दिया। यहीं से शिक्षा प्राप्त कर उन्होंने अध्यापन के माध्यम से गुरु-शिष्य परंपरा को आगे बढ़ाया, जिसमें कला को जीवन-दृष्टि के विस्तार के रूप में स्थापित किया गया। वरिष्ठ कलाकार जय कृष्ण अग्रवाल के अनुसार, महाविद्यालय में क्रिएटिव प्रिंटमेकिंग विभाग की स्थापना के शुरुआती दौर में मनोहर लाल भुगरा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही—पहले एक प्रतिभाशाली छात्र और बाद में एक समर्पित अध्यापक के रूप में। उस समय प्रिंटमेकिंग के प्रति वातावरण अनुकूल नहीं था; बंगाल वॉश तकनीक का वर्चस्व था और इस माध्यम को कला के रूप में स्वीकारने में संकोच किया जाता था। ललित मोहन सेन जैसे कलाकारों के प्रयासों के बावजूद यह विधा व्यापक रूप से स्थापित नहीं हो सकी थी।सन् 1956 में सुधीर रंजन खास्तगीर द्वारा किए गए शैक्षिक परिवर्तनों ने नई संभावनाओं को जन्म दिया, जब क्रिएटिव प्रिंटमेकिंग को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया।

रेट्रोस्पेक्टिव प्रदर्शनी

“छापा –
Imprint of a Lifetime”

6 मई 2026

शाम 5:30 बजे

कोकोरो आर्ट गैलरी
लखनऊ

आगे चलकर विभागीय विकास में जय कृष्ण अग्रवाल की भूमिका निर्णायक रही। वे बताते हैं कि उस समय छात्रों को इस माध्यम से हतोत्साहित किया जाता था, लेकिन मनोहर लाल भुगरा ने अपनी तकनीकी दक्षता और प्रयोगशीलता के बल पर एक अलग पहचान बनाई। सीमित संसाधनों में भी उन्होंने सृजनात्मकता का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया और अन्य विद्यार्थियों को प्रेरित किया।

उनकी कला-यात्रा का एक महत्वपूर्ण मोड़ तब आया जब उन्होंने इंग्लैंड जाने के बजाय शांतिनिकेतन में सोमनाथ होर के निर्देशन में अध्ययन करने का निर्णय लिया। इस निर्णय ने उनकी कला को गहरी वैचारिक और तकनीकी परिपक्वता प्रदान की।

जय कृष्ण अग्रवाल के अनुसार, मनोहर लाल भुगरा एक अत्यंत संवेदनशील, प्रयोगशील और तकनीकी रूप से प्रखर कलाकार रहे हैं। उनकी कृतियाँ यह सिद्ध करती हैं कि प्रिंटमेकिंग केवल एक तकनीकी प्रक्रिया नहीं, बल्कि असीम सृजनात्मक संभावनाओं का क्षेत्र है। उनके लिथोग्राफ और एचिंग प्रिंट्स तकनीकी उत्कृष्टता के साथ-साथ संवेदनात्मक गहराई के सशक्त उदाहरण हैं।

प्रदर्शनी में शामिल भूपेंद्र कुमार अस्थाना का आलेख भी विशेष महत्व रखता है, जिसमें सहपाठियों और शिष्यों की स्मृतियों के माध्यम से कलाकार के व्यक्तित्व और उनके शिक्षकीय प्रभाव को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया गया है।

“छापा – IMPRINT OF A LIFETIME” केवल एक प्रदर्शनी नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक पुनर्स्मरण है—जहाँ एक कलाकार की साधना, एक गुरु की विरासत और एक परंपरा की निरंतरता एक साथ उपस्थित होती है। यह प्रदर्शनी कला प्रेमियों, विद्यार्थियों, शोधार्थियों और आम दर्शकों के लिए छापाकला की विविध तकनीकों और उसके सौंदर्यबोध को समझने का एक महत्वपूर्ण अवसर है। यहाँ हर प्रिंट समय, स्मृति और संवेदना के बीच एक जीवंत संवाद के रूप में सामने आता है।